VOL- VII ISSUE- VIII AUGUST 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

स्वाधीन भारत का राजनीतिक परिदृश्य और हिन्दी कविता

डॉ. श्रीनिवास सिंह यादव
सहायक प्रोफेसर ,श्यामाप्रसाद कॉलेज
कोलकाता

भारत के अतीत की राजनीति एक लम्बे समय तक विदेशी शासकों के हाथ में रही है | उनमें से अधिकांश की सोच इस मुल्क के बारे में अच्छी नहीं रही | एक के बाद एक इस देश पर शासन करते रहे | लगभग सभी ने अपने-अपने तरीके से यहाँ की समृद्धि को लूटते रहे | लगभग सभी ने अपने आचार –विचार ,संस्कृति एवं भावनाओं को यहाँ की जनता पर लड़ने का प्रयास किया | हालाँकि बाहरी आक्रान्ताओं के दमन की परिस्थिति तैयार करने में यहाँ के अपने शासकों ,सामंतों एवं रजवाड़ों का कम हाँथ नहीं था | क्योंकि उनमें एक सार्वभौम राष्ट्र की अवधारणा एवं जातीय चेतना का अभाव था | देश टुकड़े –टुकड़े सूबों में बंटाहुआ था | देश की शक्ति विखंडित थी | राजा भोग विलास में डूबे रहते थे | आम जनता से उनका सरोकार बहुत ही कम रहता था |

सबके अंत में अंग्रेज इस देश में व्यापार के मकसद से आये और यहाँ के शासक बन गए | वस्तुतः यह हमारे देश की आतंरिक कमजोरियों का ही नतीजा था | अंग्रेजों ने इस दश को सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक एवं धार्मिक सभी तरह से खोखला बना दिया | इस सम्बन्ध में रामविलास शर्मा ने बहुत सही लिख है कि `` अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों को राजभक्ति सिखाई ,उनके अन्दर फूट की आग सुलगाई ,उन्हें एक दूसरे का खून बहाना सिखाया , यहाँ की संस्कृति और भाषाओँ को पैरों टेल रौंदा और यहाँ से जितना धन लूटकर ले गए ,उतना अपने बाकी विश्वव्यापी साम्राज्य से न ले गए .... अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने भारतीय जनता को गुलामी की शिक्षा दी ,भरसक उसके राष्ट्रीय सम्मान और उसकी प्रतिरोध की भावना को कुचलने की कोशिश की | ``1

अंग्रेजी राज के बाद भारत की स्थिति पर कार्ल मार्क्स ने जो टिप्पणी की वह गौर करने लायक है `` इंग्लैण्ड ने तो भारतीय समाज का सारा ढांचा ही तोड़ डाला ,और उसके नव निर्माण के कोई लक्षण अभी तक नजर नहीं आते | इस भाँति एक तरफ भारतीय जनता की पुरानी दुनिया खो गई और दूसरी नयी दुनिया मिली नहीं , जिससे उसकी वर्तमान दुःखपूर्ण दशा और भी करुण हो जाती है और ब्रिटिश शासन के नीचे भारत अपनी सभी प्राचीन परम्पराओं ,अपने पिछले इतिहास से कट जाता है | `` 2 एक अखंड राष्ट्र ,स्वचेतना ,जातीय चेतना ,इहलौकिकता ,वैज्ञानिक दृष्टिकोण ,मानवतावाद ,व्यापक सामाजिकता की भावना इत्यादि आधुनिक युग की प्रमुख घटनाएँ हैं | इन्हीं के प्रकाश में सर्वप्रथम सन् 1857 ई० में भारतीय जनता ने एक व्यापक राष्ट्रीय विद्रोह की शुरुआत की | और एक लम्बे एवं कठिन संघर्ष के बाद भारत को आजादी मिली |

जाते –जाते भी अंग्रेज भारत में साम्प्रदायिकता का बीज बो गए और परिणाम स्वरूप हमें एक खंडित भारत मिला | साम्प्रदायिकता का जो बीज उन्होंने बोया था वह वर्तमान भारत में और भी विकट रूप में हमारे सामें उपस्थित हो जाती है | कभी –कभी तो ऐसा लगता है मानों भारत कोई एकबद्ध राष्ट्र न होकर विभिन्न जातियों ,सम्प्रदायों और धर्मों में बँटा हुआ जमीन का कोई एक टुकड़ा मात्र है | जहाँ नजर दौड़ायें वहीं किसी न किसी प्रकार का संघर्ष दिखाई पड़ता है | लोगों की भावनाओं को भड़काकर राजनेता भी अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं | आज़ादी के खातिर एक होकर लड़ने वाले लोग एक दूसरे को मारने - कटाने लगे थे | भाई भाई के खून का प्यासा हो गया | उस समय देश के टुकड़े होते देख देश से प्यार करने वाले आम जन से लेकर बौधिक एवं चिन्तक तक सभी आहत हुए | `एक भूल` शीर्षक कविता में बहुत पीड़ा के साथ केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा -

`` आह ! धरती बॅट गई
एक हिंदुस्तान अब दो हो गया है
आग ,पानी और गगन तक बॅट गया है
आदमी का दिल कलेजा कट गया है .....
भूल यह ऐसी हुई है
जो अनेकों पीढ़ियों तक दुःख हमें देती रहेगी
हम कराहा ही करेंगें | ``3

विदेशी शासकों के खिलाफ लड़ने वाले देश भक्तों के मन में इस देश के भविष्य के बारे में बड़ी –बड़ी आशाएं थीं | उन्होंने एक सपना देखा था कि शासन की बागडोर अपने लोगों के हाथ में आएगी तब समाज शोषणमुक्त हो जायेगा | वे भारत में रामराज्य स्थापित करना चाहते थे | उनके सपनों में एक ऐसी शासनव्यवस्था थी जिसकी बुनियाद शांति ,समृद्धि और सबके लिए न्याय पर टिकी हुई हो | आजादी के पहले सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधने वाली भारतीयता की जो व्यापक लहर चारों तरफ दिखाई दे रही थी उसमें धीरे-धीरे गिरावट आती चली गई | स्वाधीनता के बाद भारतीय समाज में संकीर्णता और अलगाव पर विचार करते हुए नरेंद्र मोहन कहते हैं कि `` आजादी के पहले भारत का लगभग हर निवासी सबसे पहले भारतवासी था ,पर आजादी के बाद भारत का औसत नागरिक पहले बंगाली ,मलयाली ,तमिल ,असमिया , पंजाबी ,मराठी अथवा गुजराती या कश्मीरी बन गया –अपने को भारतवासी उसके बाद माना | कुल मिलाकर भारतीय समाज में हर स्तर पर पृथक संस्कृति व पृथक पहचान को मान्यता मिल गई और अपनी इस पृथक पहचान को सुदृढ़ करने के इरादों से यह राष्ट्र पहले भारतीय न होकर पहले हिन्दू ,मुस्लमान ,सिख ,या इसाई ,नगा या कश्मीरी हो गया |``4 स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति निश्चित रूप देश के नागरिकों के लिए बहुत उत्साह देने वाली नहीं रही है |

अपने देश के शासक भी जनता की भावनाओं पर खरे नहीं उतरे | समाज में शोषण ,अन्याय ,अवसरवादिता , दमन, साम्प्रदायिकता एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला अपनी चरम पर पहुँच गया | कुर्सी लोलुप राजनेता एन-केन प्रकारेण अपने स्वार्थ सिद्धि में लग गए | इस देश की साधारण जनता का बहुत जल्दी ही रामराज्य से मोहभंग होने लगा | इसी दिखावे के रामराज पर टिप्पणी करते हुए केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा कि

`` आग लगे इस रामराज में
ढोलक मढ़ती है अमीर की
चमड़ी बजती है गरीब की
खून बहा है रामराज में
आग लगे इस रामराज में | `` 5

आजादी के नाम पर सत्ता का हस्तांतरण तो हुआ लेकिन समाज की बुनियादी समस्याएँ जस की तस बनी रहीं | देश के नेतृत्व ने साम्राज्यवादी शक्तियों से समझौता किया | समाज में अमीरी और गरीबी की .खाई बढ़ती चली गई | शहीदों का नाम लेकर जनता की भावनाओं से खेला गया | नागार्जुन ने अपनी अनेक कविताओं में आजादी के बाद की राजनीति की दुर्व्यवस्था का निर्मम ढंग से पर्दाफास किया है | देश के राजनेताओं ने राजनीति को समाज सेवा के स्थान पर अपने लिए सुख –सुविधाएँ जुटाने का माध्यम बना लिया | नागार्जुन ने युगधारा में ऐसे राजनेताओं पर प्रहार करते हुए लिखा –

``हमें सीख दो शांति और संयत जीवन की
अपने खातिर करो जुगाड़ अपरिमित धन की
बेंच-बेंच कर गाँधी का नाम
बटोरो वोट
हिलाओ शीश
बैंक वैलेंस बढ़ाओ
राजघाट पर बापू की बेदी के आगे अश्रु बहाओ |`` 6

हमारे देश की संसद जिसको कि लोकतंत्र का मंदिर कहा जाता है | उसके सदस्य बनने के लिए होने वाले चुनावों में बड़े पैमाने पर भ्रष्ट तरीके अपनाये जाते हैं | चुनाव जीतने के लिए धनबल और बाहुबल का प्रयोग किया जाता है | चुनावों में लोकतान्त्रिक मूल्यों का जमकर माखौल उड़ाया जाता है | बड़े –बड़े अपराधी और हत्यारे गलत तरीके अपनाकर, चुनाव जीतकर संसद पहुँचते हैं | देश की समस्याओं पर विचार के करने के लिए बनाई गई संसद अब छुद्र राजनीतिज्ञों का जमघट बनकर रह गई है | भ्रष्टाचार में डूबे राजनेता शासक और मंत्री बनने में लगे हैं, और जो कुछ इमानदार हैं भी तो उनके खिलाफ षडयंत्र किया जाता है | उन्हें तरह-तरह से परेशान किया जाता है | धूमिल अपने देश की संसद की इस स्थिति पर सटीक टिप्पणी करते हैं कि

``अपने यहाँ देश की संसद
तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल आधा पानी है
और यदि यह सच नहीं है
तो वहाँ एक ईमानदार आदमी को
अपनी ईमानदारी का मलाल क्यों है
जिसने सत्य कह दिया है
उसका बुरा हाल क्यों है |``7

झूठी –मूठी योजनायें एवं कार्यक्रम तैयार करके देश के रहबरों ने अपना पाकेट भरना आरम्भ कर दिया | सामान्यतः गुंडे ,स्मगलर ,बदमाश असामाजिक किस्म के लोगों का राजनीति में वर्चस्व बढ़ने लगा | अवसरवादिता के कारण दल –बदल का काम खूब जोर-शोर से शुरू हो गया | आजादी के बाद भारतीय समाज में तनाव बढ़ने लगा | राजनीतिक छल –छद्म नया –नया रूप धारण करके उपस्थित होने लगा | राजनीतिक उथल –पुथल में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई | स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति की स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखा है कि `` समकालीन कविता में समसामयिक राजनीतिक परिवेश का संकट अनेक रूपों और कोणों के साथ उपस्थित मिलता है | राजनीति ऐसी उथल-पुथल से गुजर कर भयावह होती गई है कि कोई भी

जागरूक और संवेदनशील व्यक्ति ,मानव भविष्य के बारे में चिंतित हुए वगैर नहीं रह सकता | अमानवीय तंत्रों ,की व्यक्तिवादिता और सर्वग्रासी विनाश की छाप ने मानवीय सर्जनात्मक क्षमता को, पुराने रागात्मक सम्बन्धों को भीतर –बाहर से बदला है | जीवन में हर स्तर आडम्बर झूठ ,ढोंग ,अवसरवादिता ,भ्रष्टाचार की आंधी में ईमानदार आदमी पिस गया है | ``8 सातवाँ और आठवाँ दशक भारतीय राजनीति का एक बहुत महत्वपूर्ण अध्याय है | यह दौर देश की सीमाओं के बाहर एवं भीतर तनाव ,संघर्ष ,विवाद और दमन का दौर था | साहित्य के क्षेत्र में भी इस उथल –पुथल का व्यापाक असर पड़ा |

सन् 1962 में तीसरा आम चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस पुनः विजयी हुई | किन्तु भारत की राजनीति में उस समय भूचाल आ गया जब सन् 1961 ई. की गर्मियों में भारत और चीन का सीमा विवाद शुरू हो गया | सन् 1962 साल में चीन ने भारत पर हमला कर दिया | उस समय भारत युद्ध के लिए बिलकुल तैयार नहीं था | उस युद्ध में भारत को पराजित होना पड़ा | इस पराजय से भारतीय नागरिक बहुत निराश हुए | देश के नेतृत्व पर उनका विश्वास भी कम हुआ | तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित नेहरू ने हिन्दी –चीनी भाई- भाई का नारा दिया था , किन्तु चीन के धोखे ने भारवासियों के दिलों को झकझोरकर रख दिया | देश के चिन्तक और रचनाकार चीन के धोखे भरे व्यवहार से बहुत क्षुब्ध हुए | हिन्दी के समकालीन रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से चीन के इस रवैये पर तीब्र प्रतिक्रियाएं दीं | कवि शमशेर ने अपनी कविता `सत्यमेव जयते` में लिखा –

``पहाड़ी नदी एक रायफल की बाढ़ है
जिसके किनारे दलाई लामा खड़ा है
और कवचधारी पञ्चशील लड़ रहे हैं
हमारे खुले बदन पंचशील से
इस धोखे का नाम दोस्ती है
और इस दोस्ती को हम
चीन कहते हैं |`` 9

भारत –चीन युद्ध के बाद कांग्रेस का आतंरिक मतभेद भी बहुत अधिक बढ़ गया | सातवें –आठवें दशक में ही देश के दृश्य पटल पर अनेक घटनाएँ घटीं | इसी युद्ध के बाद `मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ` दो धड़ों में बंट गई | सन् 1964 में पंडित नेहरू का निधन हो गया | 6 सितम्बर, 1965 को पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर जिसमें वह भारत के हांथों पराजित हुआ | सन् 1967 में आम चुनाव हुए जिसमें कई प्रान्तों में कांग्रेस बुरी तरह हारी | भारत के आठ प्रान्तों और दिल्ली महानगर परिषद में गैर कांगेसी दलों ने बहुमत प्राप्त किया | जनता अपने अभिमत से यह जता दिया कि वह कांग्रेस की शासन व्यवस्था से खुश नहीं है | राममनोहर लोहिया ने कोंग्रेस को कुंडलीमार सर्प की संज्ञा दी और इसे उखाड़ फेंकने के लिए जनता से आह्वान किया | जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति का आन्दोलन भी लगभग इसी दौर में चला |

सन् 1967 की एक महत्वपूर्ण घटना ने भारतीय समाज ,राजीनीति और साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया | वह घटना थी `नक्सलबाड़ी आन्दोलन`| यह आन्दोलन पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग क्षेत्र में स्थित नक्सलबाड़ी ग्राम से शुरू हुआ | यह आन्दोलन मूलतः गरीब किसानों द्वारा अत्याचारी जमीदारों के खिलाफ शुरू हुआ था | इस

आन्दोलन को देश के युवाओं, सामजिक चिंतकों और रचनाकारों का व्यापक समर्थन हासिल हुआ | देखते – देखते यह आन्दोलन देश के अन्य प्रान्तों जैस बिहार ,उडीशा, आंध्र प्रदेश आदि में भी फ़ैल गया | नागार्जुन ,धूमिल एवं कुमार विकल जैसे कवियों ने भी नक्सल आन्दोलन के समर्थन में कविताएँ लिखीं | वस्तुतः नक्सलबाड़ी आन्दोलन आजाद भारत की राजनीतिक अव्यवस्था एवं सामाजिक –आर्थिक विषमता का ही परिणाम था | धूमिल ने `पटकथा` में लिखा -

``एक ही संविधान के नीचे
भूख से रियाती हुई फैली हथेली का नाम
`दया` है
और भूख में
तनी हुई मुट्ठी का नाम
नक्सलबाड़ी है |`` 10

वस्तुतः पूरे देश में पूरे देश में नक्सलबाड़ी आन्दोलन को बुद्धिजीवियों और छात्रों का व्यापक समर्थन मिला | देश की अनेक भाषाओँ में इसके समर्थन में कविताएँ लिखी गईं | इस आन्दोलन लोगों पर किये जाने वाले जुल्म एवं दमन के विरोध में आलेख और कविताएँ लिखी गईं | उस समय अनेक नौजवानों को नक्सल आन्दोलन से जुड़े होने के संदेह में झूठे इनकाउंटर दिखा कर मार दिया गया | कभी – कभी ऐसा भी होता था कि नौजवानों को मार दिया जाता था और उसे जुड़ी खबरें दबा दी जाती थीं | उस समय की स्थिति को बयान करते हुए अरुण कमल ने अपनी कविता `खबर` में

लिखा कि –

`` अखबारों में खबर थी : कैलफोर्निया की
एक कुतिया ने तेरह बच्चे
एक साथ जने
अखबारों में खबर थी :
युवराज ने कंगालों में कम्बल बाँटें
अखबारों में खबर थी
विश्वसुंदरी का वजन 31 किलो है
अखबारों में खबर थी :
राजनेता ने दाढ़ी मुड़ाई |
एक खबर जो कहीं नहीं थी :
किसान गौड़ को फाँसी हो गई
भूमैया को फाँसी हो गई | ``11

आपात काल एक ऐसी घटना है जिसने भारतीय राजनीति और समाज में भारी उथल –पुथल मचा दिया था | कई बुद्धिजीवियों ने इसे भारतीय राजनीति का कला पृष्ठ कहा है | हिन्दी के कई रचनाकरों की काव्य यात्रा इस भयावह समय से होकर गुजरी है | इसकी अनुगूँज उनकी कविताओं में है | सन् 1971 में आम चुनाव हुए जिसमें प्रसिद्ध समाजवादी नेता राजनारायण ने रायबरेली से श्रीमती इंदिरा गाँधी के खिलाफ चुनाव लड़ा | वे श्रीमती गाँधी से अपना चुनाव हार गए | चुनाव में धाँधलियों का आरोप लगाते हुए उन्होंने इलाहबाद उच्च न्यायलय में एक याचिका दायर कर दी | मुक़दमा लगभग पूरे तीन वर्षों तक घिसटता रहा ,एक कार्य स्थल से दूसरे कार्यस्थल तक और एक न्यायधीश से दूसरे न्यायाशीश तक | 12 जून सन् 1975 ई. के दिन न्यायमूर्ति जगमोहन लाल सिन्हा ने `` जन्प्रतिनिधित्व क़ानून की धारा 123 (7 ) के अधीन |``12 श्रीमती गाँधी को भ्रष्ट साधन अपनाने का दोषी करार दिया |

चुनाव को रद्द करते हुए जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा 8 अ के अनुसार इस फैसले की तिथि से से आरम्भ करके 6 वर्षों की अवधि तक के लिए उनकी अर्हता समाप्त कर दी | `` इलाहाबाद में दिया गया यह फैसला भारत के इतिहास की एक महत्वपूर्ण

घटना माना जाएगा | इसने भारतीय राजनीति को एक गहरा मोड़ दिया | घटनाओं की गति को एक नयी व्यग्रता प्रदान की | ``13 न्यायलय के निर्णय के आधार पर श्रीमती गाँधी को अपना पद त्याग देना चाहिए था किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि अपनी सत्ता को बचाए रखने के लिए 26जून 1975 को आपात् काल की घोषणा कर दी और एक-एक करके सभी छोटे बड़े नेताओं को जेलों में बंद कर दिया | समाचार पत्रों ,रेडियो,दूरदर्शन इत्यादि सभी माध्यमों पर सेंसरशिप लागू कर दी गई | इस तरह 19 महीनों के एक यातनापूर्ण समय की शुरुवात्त हुई |

एक यवनिका के गिरने के बाद शुरू हुआ देश के मंच पर एक नया नाटक गैर कांग्रेसी कई पार्टियों ने मिलकर एक नया मोर्चा बनाया जिसे जनता पार्टी के नाम से जाना गया | वह सत्ता में आयी | इसके संगठन में जयप्रकाश नारायण की महत्वपूर्ण भूमिका थी | कई घटकों में व्यक्तिगत महत्वाकान्क्षाएं और वैचारिक मत्वेद उभरकर सामने आये | जनता पार्टी भी देश के लिए बहुत कल्याणकारी सिद्ध नहीं हुई | समस्याएँ जस की तस बनी रहीं | उस समय भी देश में अस्थिरता का माहौल बन गया था | देश के कई प्रान्तों जैसे नागालैंड, असम, मिजोरम पंजाब आदि में अलगाववादी आन्दोलन चल रहे थे | जनता पार्टी की सरकार लगभग ढाई वर्ष तक रही किन्तु देश के नागरिकों को उसने भी निराश ही किया | उसका काम-काज बहुत संतोषजनक नहीं रहा |

जनता पार्टी के आपसी अंतर्विरोधों एवं विखराव के कारण समय से पहले ही 1980 में लोकसभा का चुनाव करवाना पड़ा | इस चुनाव में जनता पार्टी के सभी घटक अपने-अपने बैनरों के नीचे लड़े और बुरी तरह पराजित हुए | देश की उस समय की स्थिति पर धूमिल की कविता की ये पंक्तियाँ सटीक बैठती हैं कि

``और हर बार मुझे लगा है कि कहीं
कोई खास फर्क नहीं है
जिंदगी उसी पुराने ढर्रे पर चल रही है
जिसके पीछे कोई तर्क नहीं है | `` 14

इंदिरा गाँधी को एक बार फिर सत्ता में आने का मौका मिला | जनता पार्टी के शासन के बाद जब इंदिरा जी ने सत्ता संभाली तब तक अधिकांश कांग्रेसी उनसे अलग हो चुके थे | उस समय पंजाब आतंक के दौर से गुजर रहा था | खालिस्तान की माँग जोरों पर थी | इंदिरा गाँधी ने आपरेशन ब्लू –स्टार जैसे कड़े कदम उठाकर पंजाब को टूटने से तो बचा लिया किन्तु 31 अक्टूबर ,1984 को श्रीमती इंदिरा गाँधी को आतंकवादियों की गोलियों से नहीं बचाया जा सका |

इसके बाद 1984 में सहानुभूति लहर ने कांग्रेस को बहुमत दिलाई और राजीव गाँधी प्रधान मंत्री बने | उनसे देश की जनता को खासकर युवाओं को को बड़ी उम्म्दें थीं किन्तु वे जनता की उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके | वस्तुतः आजादी के बाद एक के बाद एक देश के नेतृत्व में परिवर्तन होता रहा | प्रशासन की बागडोर एक से दूसरे के हाथ में आती रही लेकिन आम नागरिक के जीवन स्तर जो सुधार होना चाहिए , था वह नहीं हुआ | परतंत्र भारत में स्वाधीन भारत के लिए देखे गए सुखद सपने यथार्थ से टकराकर छलनी होते चले गए | देश के इस राजनितिक परिदृश्य को हिन्दी के अनेक कवियों जैसे- नागार्जुन ,रघवीर सहाय ,धूमिल ,आलोक धन्वा, कुमार विकल आदि ने अपनी कविताओं के

माध्यम से रेखांकित किया है | उनकी तमाम कविताओं में देश का नेतृत्व करने वाले राजनेताओं के अवसरवादी एवं दोहरे चरित्र के प्रति तीव्र प्रतिक्रियाएँ हैं | उनकी रचनाएँ जनसरोकारों से सघन रूप से जुड़ती हैं |

सन्दर्भ सूची –

1-रामविलास शर्मा , भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली चौथा संस्करण , पृ. 65-66

2- उद्धृत –नामवर सिंह , परम्परा की आधुनिकता : हजारी प्रसाद द्विवेदी , (सं) अशोक वाजपेयी , पृ.150

3- केदारनाथ अग्रवाल , कहें केदार खरी –खरी, (केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ), संपादकअशोक त्रिपाठी ,साहित्य भंडार ,इलाहबाद , संस्सकरण - 2009, पृ. 26

4- नरेन्द्र मोहन, आज की राजनीति और भ्रष्टाचार , राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट , नई दिल्ली , पृ.37

5 – केदारनाथ अग्रवाल : संचयिता , महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय , वर्धा के लिए प्रकाशित, संपादक : अशोक त्रिपाठी ,संस्करण - 2011 , पृ.121

6- नागार्जुन ,युगधारा, यात्री प्रकाशन ,दिल्ली ,संस्करण , 2001, पृ.92

7 –धूमिल ,संसद से सड़क तक ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,संस्करण 1998 , पृ. 127

8- उद्धृत -डॉ वी कृष्ण स्वातंत्र्योत्तर कविता का वैचारिक संघर्ष , अन्नपूर्णा प्रकाशन ,साकेत नगर, कानपुर , प्रथम संस्करण-1996 , पृ.-63

9 – शमशेर बहादुर सिंह ,चूका भी हूँ मैं नहीं , राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली , संस्करण ,1975 , पृ.131-135

10 -धूमिल ,संसद से सड़क तक ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,संस्करण ,1998 , पृ. 127

11-उद्धृत –डॉ टी.ए. बाबू सामजिक प्रतिबद्धता और नववामपंथी कविता ,सूर्य भारती प्रकाशन ,दिल्ली , प्रथम संस्करण -1998 , पृ.71

12 – डी.आर. मानकेकर, कमला मानकेकर (अनुवाद : वीरेंद्र कुमार गुप्त) इंदिरा गाँधी का पतन : इमरजेंसी की लोमहर्षक कहानी , पृ.12

13 – वही पृ.13

14- धूमिल , संसद से सड़क तक ,राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली ,संस्करण 1998 , पृ. 124

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com